

# लाभ का सिद्धान्त

बीएईसी-101 & एमएईसी (BAEC-101 & MAEC 101)

Presented by

**Dr. Shalini Chaudhary**

Assistant Professor & Coordinator

Department of Economics

Uttarakhand Open University, Haldwani

# लाभ का सिद्धान्त

- लाभ का मजदूरी सिद्धान्त
- लाभ का लगान सिद्धान्त
- लाभ का प्रवैगिक सिद्धान्त
- शुम्पीटर का नव प्रवर्तन सिद्धान्त
- लाभ का सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त
- लाभ का जोखिम सिद्धान्त
- लाभ का अनिश्चितता सिद्धान्त
- प्रो० मेहता का लाभ का माँग एवं पूर्ति सिद्धान्त
- लाभ का समाजवादी सिद्धान्त

# लाभ का सिद्धान्त

- **सामान्य लाभ** - प्रत्येक साहसी लाभ अर्जित करने के उद्देश्य से जोखिम उठाता है। अतएव यह आवश्यक है कि उसे उत्पादन प्रक्रिया में कम से कम इतना लाभ मिलता रहे जिससे वह कार्य में लगा रहे। यही सामान्य लाभ है।
- **असामान्य लाभ** - किसी भी साहसी को सामान्य लाभ के ऊपर जो लाभ प्राप्त होता है उसे असामान्य लाभ कहते हैं। हैन्सन के शब्दों में “सामान्य लाभ के अतिरिक्त जो लाभ प्राप्त होता है उसे असामान्य लाभ कहते हैं। असामान्य लाभ लगान की तरह एक प्रकार का अतिरेक है, जो कुशल साहसियों को मिलता है सीमान्त साहसी असामान्य लाभ नहीं प्राप्त कर पाता है। पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति में असामान्य लाभ बाहरी फर्मों के प्रवेश के लिए आकर्षण का कारण बनता है और दीर्घकाल में असामान्य लाभ विलुप्त हो जाता है।

# लाभ का मजदूरी सिद्धान्त

- इस सिद्धान्त का प्रतिपादन अमरीकी अर्थशास्त्री प्रो० टॉजिंग द्वारा किया गया था। एक अन्य अमरीकी अर्थशास्त्री प्रो० डेवनपोर्ट ने इसका समर्थन किया था। इस सिद्धान्त के अनुसार लाभ भी एक प्रकार की मजदूरी होता है, जिसे उद्यमकर्ता को उसकी सेवाओं के बदले चुकाया जाता है। प्रो० टॉजिंग के शब्दों में, “लाभ उद्यमकर्ता की वह मजदूरी है जो उसे उसकी विशेष योग्यता के कारण प्राप्त होती है।” इस सिद्धान्त के अनुसार श्रम एवं उद्यम में पूर्ण समानता है। जिस प्रकार श्रम अपनी सेवाओं के बदले मजदूरी प्राप्त करता है, ठीक उसी प्रकार उद्यमी अपनी उत्पादन सम्बन्धी भूमिका के एवज में लाभ प्राप्त करता है। अन्तर केवल इतना है कि श्रम की सेवाएँ शारीरिक होती हैं जबकि उद्यमकर्ता का कार्य मानसिक होता है। इस सिद्धान्त के अनुसार उद्यमी, डॉक्टरों, वकीलों एवं अध्यापकों जैसे मानसिक कार्यकर्ताओं से किसी भी प्रकार भिन्न नहीं होता है। इसी आधार पर प्रो० टॉजिंग ने लाभ को एक प्रकार की ऐसी मजदूरी कहा है जो उद्यमी को सेवाओं के बदले प्राप्त होती है।

- **आलोचना :-** आलोचकों ने इस सिद्धान्त के प्रमुख दोष निम्न बताये हैं -
- लाभ एक अवशेष भुगतान है जबकि मजदूरी सदैव धनात्मक रहती है।
- उद्यमी को जोखिम व अनिश्चिताओं का सामना करना पड़ता है जबकि श्रमिक को ऐसी कोई समस्या नहीं होती।
- अपूर्ण प्रतियोगिता में लाभ बढ़ते हैं जबकि मजदूरी में कमी होने की प्रवृत्ति पायी जाती है।
- संयुक्त पूँजी कम्पनी में अंशधारी लाभ प्राप्त करते हैं जबकि वे कोई भी मानसिक श्रम नहीं करते।

# लाभ का लगान सिद्धान्त

- इस सिद्धान्त की परिकल्पना का श्रेय ब्रिटिश अर्थशास्त्री सीनियर तथा मिल को जाती है परन्तु प्रस्तुत करने का श्रेय अमरीकन अर्थशास्त्री प्रो० वॉकर को जाता है। यह सिद्धान्त वॉकर के नाम से ही जाना जाता है। इस सिद्धान्त का मूल मंत्र रिकार्डों का लगान सिद्धान्त है। रिकार्डों के अनुसार लगान एक भेदात्मक उपज है जो अधिक उर्वरता वाली भूमियों पर सीमान्त भूमि की अपेक्षा प्राप्त होती है। जिस प्रकार भूमि के भिन्न-भिन्न टुकड़ों की उपजाऊ शक्ति में अन्तर होता है उसी प्रकार उद्यमियों की योग्यता में भी अन्तर पाया जाता है। सीमान्त भूमि की भाँति सीमान्त उद्यमी सामान्य योग्यता का व्यक्ति होता है और वह अपनी वस्तु को उत्पादन लागत पर ही बेच पा सकने के कारण कोई आधिक्य प्राप्त नहीं कर पाता। सीमान्त उद्यमी से अधिक योग्य व कार्यकुशल उद्यमी आधिक्य प्राप्त कर लेते हैं, वही लाभ है।

- **आलोचना :-** इस सिद्धान्त के प्रमुख दोष निम्न पाये गये हैं -
- यह सिद्धान्त एकाधिकारी लाभ व आकस्मिक लाभ के स्पष्ट नहीं करता।
- सीमान्त उद्यमी की परिकल्पना ही गलत है क्योंकि सामान्य लाभ न मिलने पर उद्यमी व्यवसाय छोड़ जाता है।
- संयुक्त पंजी कम्पनी के हिस्सेदारों को जो लाभांश मिलता है उसमें योग्यता का प्रश्न ही नहीं आता।
- लाभ व लगान दोनों में मौलिक अन्तर है क्योंकि लगान कभी भी ऋणात्मक नहीं हो सकता।
- यह सिद्धान्त लाभों में पाये जाने वाले अन्तर को स्पष्ट करता है, उसकी प्रकृति को स्पष्ट नहीं करता।

# लाभ का प्रवैगिक सिद्धान्त

- लाभ के इस सिद्धान्त का वैज्ञानिक विवेचन अमेरिकन अर्थशास्त्री जे0वी0 क्लार्क के द्वारा किया गया है। क्लार्क के मत में लाभ अर्थव्यवस्था की प्रवैगिक स्थिति का परिणाम है, स्थैतिक अवस्था में लाभ का जन्म नहीं होगा। प्रवैगिक अवस्था, वस्तु के विक्रय-मूल्य तथा लागत में अन्तर उत्पन्न करती है और यह अन्तर ही लाभ है। उनके अनुसार स्थैतिक अवस्था में जहाँ माँग तथा पूर्ति की दशाओं में कोई परिवर्तन नहीं होता है, सीमान्त उत्पादकता-सिद्धान्त के आधार पर उत्पादन के साधनों के मूल्य दिये जाने पर कुल सीमान्त उत्पादन बँट जायेगा और साहसी को लाभ नहीं मिलेगा। क्लार्क के शब्दों में “स्थैतिक अवस्था में उत्पत्ति के प्रत्येक साधन को उसके उत्पादन के बराबर भाग पारितोषिक के रूप में मिलता है और चूँकि लागत तथा विक्रय-मूल्य सदैव समान रहते हैं, अतएव मजदूरी के अतिरिक्त निरीक्षण कार्य के लिए कोई मजदूरी नहीं मिलती है।”
- क्लार्क ने प्रवैगिक अवस्था में निम्नांकित पाँच परिवर्तनों का उल्लेख किया है:
  1. जनसंख्या में वृद्धि
  2. उत्पादन विधि में सुधार तथा तकनीकी विकास
  3. पूँजी की पूर्ति में वृद्धि
  4. उपभोक्ताओं की रुचि, इच्छा आदि में परिवर्तन, तथा
  5. औद्योगिक संगठन में परिवर्तन

- **आलोचनायें :-** अर्थशास्त्रियों के अनुसार इस सिद्धान्त के प्रमुख दोष निम्न हैं -
- सभी प्रकार के परिवर्तन लाभ को जन्म नहीं देते बल्कि केवल वे परिवर्तन जो अनिश्चित या अज्ञात होते हैं, लाभ को जन्म देते हैं।
- यह कहना भी गलत है कि स्थिर अर्थव्यवस्था में लाभ बिल्कुल नहीं मिलता।
- इस सिद्धान्त में लाभ और प्रबन्ध की मजदूरी के बीच एक काल्पनिक अन्तर किया गया है।
- इस सिद्धान्त में जोखिम तत्व की पूर्णतः उपेक्षा की गयी है।

# शुम्पीटर का नव प्रवर्तन सिद्धान्त

- प्रसिद्ध अर्थशास्त्री जोसेफ शुम्पीटर ने इस बात पर बल दिया कि साहसी का प्रमुख कार्य उत्पादन क्रिया में नवप्रवर्तन को लाना है तथा लाभ इसी नवप्रवर्तन की क्रिया का प्रतिफल है। नवप्रवर्तन से उनका अभिप्राय किसी भी ऐसे परिवर्तन से है जिसके फलस्वरूप उनकी आय में वृद्धि आये। हम पहले ही जान चुके हैं कि किसी साहसी की आय दो बातों पर निर्भर करती है - प्रथम उत्पादन की मात्रा तथा उत्पादन-लागत, दूसरे उत्पादित वस्तु की मांग। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि नव प्रवर्तन एक ओर तो उत्पादन फलन में लाये जाने वाले ऐसे परिवर्तनों से सम्बन्धित है, जिससे न्यूनतम लागत पर अधिक से अधिक उत्पादन की प्राप्ति हो सके तथा दूसरे ऐसे परिवर्तन जिनसे उत्पादित वस्तुओं की मांग में वृद्धि हो सके। इन प्रकार नवप्रवर्तन के अन्तर्गत प्रायः निम्नांकित क्रियायें आती हैं -

1. उत्पादन की नयी प्रविधि या तरीकों को जन्म देना।
  2. कच्चे माल तथा सामग्रियों के किसी नये स्रोत की खोज।
  3. किसी भी उद्योग में नयी संगठन व्यवस्था को बनाये रखना।
  4. किसी नयी वस्तु को बाजार में लाना तथा
  5. किसी नये बाजार की खोज।
- नवप्रवर्तन तथा लाभ के सम्बन्ध में प्रो० स्टिगलर का दृष्टिकोण अत्यन्त ही उल्लेखनीय है। उनके अनुसार “जब तक कि कोई एक स्थायी एकाधिकार की स्थिति स्थापित नहीं कर लेता, ऐसे लाभ जो सफल नवप्रवर्तन के कारण प्राप्त होते हैं, संक्रमणकारी (अस्थायी) होंगे और अन्य फर्मों के इन्हें बाँटने के प्रयास के कारण समाप्त हो जायेंगे। पर ये लाभ अन्य फर्मों की इसके सम्बन्ध में अनभिज्ञता के कारण या नयी फर्मों के प्रवेश में समय लगने के कारण, पर्याप्त समय के लिए बने रह सकते हैं। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि एक सफल नव प्रवर्तक लगातार इस प्रकार के असामान्य लाभ को अर्जित कर सकता है, क्योंकि नवप्रवर्तन को उत्पादन के प्रयोग में शुरू करता है तो कुछ समय तक तो उसकी सफलता के कारण उसे एकाधिकार की स्थिति प्राप्त हो जाती है और वह लाभ अर्जित करता है। पर धीरे-धीरे यह लाभ समाप्त हो जाता है।

## आलोचनायें

- यह सिद्धान्त हमारे समक्ष लाभ की व्यापक व्याख्या प्रस्तुत नहीं करता। इसमें सन्देह नहीं है कि नवप्रवर्तनों के कारण लाभ उत्पन्न होता है। नव प्रवर्तन, वास्तव में लाभ के महत्वपूर्ण निर्धारक हैं। लेकिन नवप्रवर्तनों के अलावा अन्य बहुत से ऐसे तत्व हैं जो लाभ का कारण बनते हैं। किन्तु यह सिद्धान्त उन पर कुछ भी प्रकाश नहीं डालता। यह सिद्धान्त तो समूचा बल नवप्रवर्तनों पर ही देता है।
- इस सिद्धान्त के अनुसार लाभ जोखिम झेलने का प्रतिफल नहीं है। प्रो० शुम्पीटर के शब्दों में, “उद्यमकर्ता कभी जोखिम नहीं उठाता। यदि उसका व्यवसाय असफल हो जाता है तो उससे ऋण प्रदान करने वाले व्यक्ति को ही हानि होती है।” प्रो० शुम्पीटर के अनुसार, जोखिम पूँजीपति द्वारा उठाया जाता है, उद्यमकर्ता द्वारा नहीं। लेकिन प्रो० शुम्पीटर का कथन तथ्यों के विपरीत है। वास्तव में, उद्यमकर्ता जोखिम उठाता है, पूँजीपति नहीं।
- उद्यमकर्ता के कार्यों पर यह सिद्धान्त एक संकुचित - सा दृष्टिकोण अपनाता है। उद्यमकर्ता का कार्य केवल नवप्रवर्तनों को क्रियान्वित करना ही नहीं है, यह व्यवसाय के समुचित संगठन के लिए भी समान रूप में उत्तरदायी होता है। अतः लाभ केवल नवप्रवर्तनों के कारण ही नहीं होता, यह उद्यमकर्ता द्वारा सम्पन्न किये गये अन्य संगठनात्मक कार्यों के कारण भी होता है। यह सर्वविदित है कि सभी उद्यमकर्ता नवप्रवर्तन नहीं करते लेकिन फिर भी उन्हें कुछ लाभ तो प्राप्त होता ही रहता है।

# लाभ का सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त

- वितरण का सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त साधनों के पुरस्कार निर्धारण की दृष्टि से एक वैज्ञानिक सिद्धान्त माना जाता है। इस सिद्धान्त के अनुसार यदि अन्य बातें समान रहें तो दीर्घकाल में किसी साधन का पुरस्कार उसकी सीमान्त उत्पादकता में समान होने की प्रवृत्ति पायी जाती है। उद्यमी की सीमान्त उत्पादकता अधिक होने पर लाभ की मात्रा अधिक होगी और उद्यमी की सीमान्त उत्पादकता कम होने पर लाभ की मात्रा कम होगी। यहाँ एक बात स्पष्ट रूप से कहना आवश्यक है कि भूमि, श्रम, पूँजी आदि साधन तो ऐसे हैं, जिनकी सामान्य उत्पादकता सरलता से ज्ञात की जा सकती है, क्योंकि अन्य साधनों की मात्रा स्थिर रखकर इनकी क्रमशः एक इकाई बढ़ाकर सीमान्त उत्पादकता निकाली जा सकती है और परिवर्तनशील अनुपातों के नियम लागू होने के कारण एक बिन्दु के बाद सीमान्त उत्पादकता क्रमशः गिरती जाती है। एक फर्म में उद्यमी की सीमान्त उत्पादकता ज्ञात करना कठिन है, क्योंकि एक फर्म में एक ही उद्यमी होता है। हाँ, उद्योग में उद्यमी की सीमान्त उत्पादकता ज्ञात की जा सकती है।

- **आलोचनायें :-** इस सिद्धान्त की आलोचना निम्न बातों पर आधार की गयी है -
- यह सिद्धान्त माँग पर ही विचार करता है और पूर्ति पक्ष की उपेक्षा करता है। इसे एकपक्षीय सिद्धान्त कहा जा सकता है।
- साहसी या उद्यमी की सीमान्त उत्पादकता की गणना सरलता से नहीं की जा सकती क्योंकि एक फर्म की स्थिति में एक ही उद्यमी होता है।
- इस सिद्धान्त में भी लाभ के निर्धारक महत्वपूर्ण तत्वों को छोड़ दिया गया है।



# लाभ का जोखिम सिद्धान्त

- अमेरिकन अर्थशास्त्री हॉले के अनुसार लाभ जोखिम उठाने का पुरस्कार है, क्योंकि उद्यमी का सबसे बड़ा कार्य जोखिम उठाना है। उत्पादन के अन्य साधनों को उनके पुरस्कार का निश्चित समय पर भुगतान कर दिया जाता है, परन्तु उद्यमी को चार प्रकार की जोखिमें उठानी पड़ती हैं
- **प्रतिस्थापन की जोखिम** : क्योंकि बिल्डिंग व मशीनरी में घिसावट होती है।
- **मुख्य जोखिम** : जिसमें उत्पादन का न बिक पाना, व्यापार चक्रों का सामना करना, बाजार में प्रतिकूल परिस्थितियों का उत्पन्न होना, आदि
- **पुराना पड़ जाना** : जिसमें उत्पादन तकनीकी तथा फैशन आदि के कारण प्लाण्ट का पुराना हो जाने की स्थिति आती है तथा
- **अनिश्चितता** : प्रतिस्थापन या घिसावट का अनुमान लगाया जा सकता है, परन्तु मशीन अथवा बिल्डिंग के पुराने पड़ जाने के सम्बन्ध में उचित अनुमान लगाना सम्भव नहीं हो पाता। वस्तु को उत्पन्न करने तथा बेचने में समय अन्तर होने के कारण हो सकता है कि उद्यमियों के अनुमान गलत सिद्ध हो जायें। इसके फलस्वरूप उद्यमी को हानि भी हो सकती है। उद्यमी हानि तभी सहेगा जब उसे लाभ की अपेक्षा हो। हॉले यह मानते थे कि उद्यमी को प्रबन्ध समन्वय का पुरस्कार लाभ के रूप में नहीं मिलता बल्कि लाभ जोखिम उठाने का पुरस्कार है।
- भविष्य की मांग उत्पादन तथा कीमत के बारे में सही अनुमान लग सकें, यह आवश्यक नहीं है, इसी कारण व्यवसाय में जोखिम की संभावना बनी रहती है।

- **आलोचनायें** :- अर्थशास्त्रियों ने इस सिद्धान्त की त्रुटियाँ निम्न बतायी हैं -
- जोखिम और लाभ के बीच कोई सहसम्बन्ध नहीं होता। कारवर के अनुसार उद्यमी को लाभ जोखिम कम करने के फलस्वरूप मिलेता है।
- जोखिम उठाने के अलावा भी उद्यमी अनिश्चितता बहन अन्य कई महत्वपूर्ण कार्य करता है, जिन्हें इस सिद्धान्त में छोड़ दिया गया है।
- प्रो0 नाइट के अनुसार लाभ ज्ञात जोखिमों के बजाय अज्ञात जोखिमों को सहने के कारण मिलता है।

# लाभ का अनिश्चितता सिद्धान्त

- इस सिद्धान्त का प्रतिपादन शिकागो विश्वविद्यालय के प्रो० नाइट ने अपनी पुस्तक “Risk, Uncertainty and Profit” में किया है। प्रो० नाइट अपने सिद्धान्त में इस बात पर बल देते हैं कि उद्यमी को लाभ जोखिम उठाने के कारण प्राप्त नहीं होता बल्कि उत्पादन प्रक्रिया की अनिश्चितता सहन करने के पुरस्कार के रूप में प्राप्त होता है। प्रो० नाइट ने जोखिम एवं अनिश्चितता में भेद किया है। उनके अनुसार सभी प्रकार के जोखिम उद्यमी के लिए अनिश्चितताएँ उत्पन्न नहीं करते। जोखिम की अनिश्चितता के आधार पर प्रो० नाइट ने दो भागों में बांटा है-
  1. ज्ञात जोखिम
  2. अज्ञात जोखिम
- उत्पादन प्रक्रिया में उन जोखिमों को ज्ञात जोखिमों की संज्ञा दी जाती है, जिनकी उद्यमी पूर्वानुमान लगा सकता है, जैसे आग, बाढ़, चोरी, दुर्घटना, टूट-फूट आदि घटनाओं का उद्यमी को पूर्वानुमान होता है।
- ज्ञात जोखिमों में विपरीत उद्यमी के लिए उत्पादन प्रक्रिया में कुछ ऐसे जोखिम विद्यमान रहते हैं जिनका उद्यमी को पूर्वानुमान नहीं होता अर्थात् जिनके बारे में सही-सही जानकारी हासिल नहीं की जा सकती। ऐसे अनिश्चित जोखिमों को अज्ञात जोखिम कहा जाता है।
- नाइट के अनुसार, “उद्यमी को ऐसी अनिश्चितता झेलने का पुरस्कार ही लाभ के रूप में प्राप्त होता है। व्यवसाय में जितनी अधिक बीमा अयोग्य अनिश्चितताएँ उपस्थित होंगी, उद्यमी की लाभ की मात्रा उतनी ही अधिक होगी।

- **आलोचनार्ये :-** आलोचकों ने इस सिद्धान्त की निम्न आलोचनाएँ की हैं -
- उद्यमी के अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को इस सिद्धान्त में छोड़ दिया गया है, जैसे व्यवसाय में समन्वय का कार्य।
- आलोचक अनिश्चितता वहन करना एक अलग कार्य के रूप में स्वीकार नहीं करते।
- संयुक्त पूँजी कम्पनी के हिस्सेदारों को जो लाभांश प्राप्त होता है उसमें वे अनिश्चितताओं का सामना नहीं करते। अतः कोई आवश्यक नहीं कि लाभ अनिश्चितताएँ सहने के परिणामस्वरूप ही प्राप्त हों।

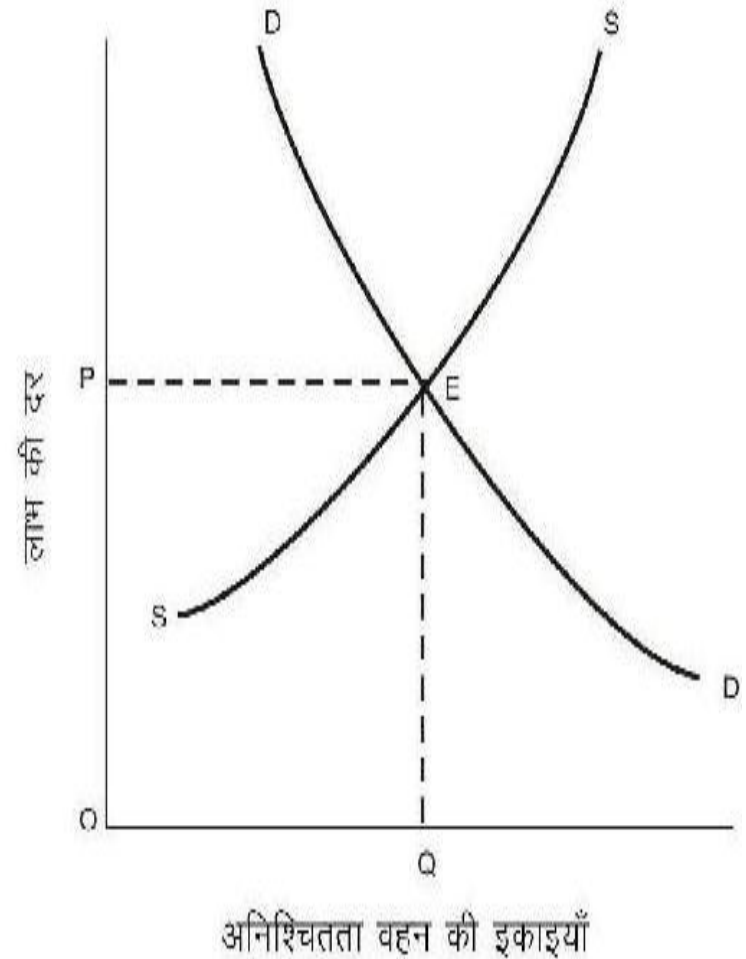
## प्रो० मेहता का लाभ का माँग एवं पूर्ति सिद्धान्त

- प्रो० मेहता ने यह प्रतिपादित किया कि “लाभ अनिश्चितता वहनकर्ता की आय है”। जिस प्रकार किसी वस्तु का मूल्य उसकी माँग तथा पूर्ति के द्वारा निर्धारित होता है उसी प्रकार साहसी को मिलने वाले मूल्य (लाभ) का भी निर्धारण अनिश्चितता वहन की माँग तथा उसकी पूर्ति के द्वारा निर्धारित होता है। लाभ अनिश्चितता वहन का पुरस्कार है, इसका निर्धारण अनिश्चितता वहन की माँग एवं पूर्ति के द्वारा होता है। पर प्रश्न यह है कि अनिश्चितता वहन की माँग तथा पूर्ति रेखाओं को कैसे खींचा जाय ? इसका क्या स्वरूप हो ? प्रो० मेहता अपने सिद्धान्त की व्याख्या करते समय दो बातों को ध्यान में रखते हैं, जिसमें उनके सिद्धान्त में वे दोष न आ जायें जो नाइट के सिद्धान्त में व्याप्त थे। प्रथम, वह यह मानते हैं कि साहसी का कार्य अनिश्चितता वहन करना है, उत्पादन का निर्देशन तथा नियंत्रण करना नहीं। इस प्रकार साहसी का कार्य संगठन के कार्य से भिन्न है। इसलिए लाभ केवल अनिश्चितता वहन के लिए ही मिलता है। प्रो० नाइट दोनों के बीच भेद करने की कठिनाई को महसूस करते हैं और प्रो० मेहता भी इस कठिनाई का अनुभव करते हैं पर वह यह मानकर चलते हैं कि यह सम्भव है कि हम मस्तिष्क में इन दोनों के बीच भेद कर लें। दूसरा, लाभ के अन्तर्गत वे आकस्मिक आय को सम्मिलित नहीं करते हैं, केवल अनिश्चितता वहन के बदले प्राप्त आय को ही लाभ के रूप में स्वीकार करते हैं तथा यह मत व्यक्त करते हैं कि किराये पर या प्रसंविदा के आधार पर लिये गये उत्पादन के साधनों को पारिश्रमिक देने के बाद जो अवशेष होगा, यदि वह अनिश्चितता वहन के बदले दिये जाने वाले पारिश्रमिक से अधिक हो तो यह अतिरिक्त आकस्मिक लाभ होगा और यदि यह कम हुआ तो आकस्मिक हानि होगी।

- अनिश्चितता वहनकर्ता की माँग कौन करता है ? तथा इस प्रकार की माँग तथा लाभ की दर में क्या सम्बन्ध है ? अनिश्चितता वहन की माँग उन उत्पादन के साधनों द्वारा होती है जो उत्पादन - क्रिया में भाग लेना तो चाहते हैं पर जोखिम उठाने अथवा अनिश्चितता को वहन नहीं करना चाहते। इसीलिए वे एक ऐसे साधन की खोज करते हैं, जो उन्हें अनिश्चितता से सुरक्षित रखें, उन्हें एक स्थिर आय प्राप्ति का आश्वासन दे दें। इस प्रकार वे साहसी की माँग अनिश्चितता वहन के लिए करते हैं। स्पष्ट है कि साहसी की माँग श्रमिक, भूमिपति, पूँजीपति तथा संगठन या जिन्हें हम प्रसंविदा के अन्तर्गत किराये पर लिये गये उत्पादन के साधन कह सकते हैं, के द्वारा होती है। अब हम दूसरे प्रश्न पर विचार करेंगे अर्थात् लाभ की दर तथा माँग में क्या सम्बन्ध होता है ? प्रो० मेहता का यह मत है कि यदि अन्य बातें समान रहें तो लाभ की दर जितनी ऊँची होती जायेगी अन्य साधनों की आय उतनी ही कम होती जायेगी। इसलिए लाभ की ऊँची दर पर वे कम साहसियों की माँग करेंगे। इनके विपरीत लाभ दर नीची होने पर अधिक साहसियों की माँग करेंगे। इसका दूसरा कारण यह हो सकता है कि किसी भी साधन की माँग एवं व्युत्पन्न माँग है।

# प्रो0 मेहता का लाभ का माँग एवं पूर्ति सिद्धान्त

- यह उसकी सीमान्त उत्पादकता पर निर्भर करती है। अन्य साधनों की ही तरह साहसी की भी सीमान्त उत्पादकता साहसी की इकाई में वृद्धि के साथ घटती जायेगी इसलिये इसपर आधारित माँग-रेखा नीचे दाहिनी ओर गिरेगी। इस प्रकार स्पष्ट है कि सामान्य माँग-वक्र की तरह अनिश्चितता वहन की माँग-रेखा दाहिनी ओर गिरती जायेगी जैसा रेखाचित्र में दिखाया गया है।
- अनिश्चितता वहन की पूर्ति तो त्याग के ऊपर निर्भर करती है, जैसे-जैसे अनिश्चितता वहन की पूर्ति बढ़ती जायेगी लाभ की मात्रा बढ़ती जायेगी। इसलिए ऊँची लाभ दर पर अनिश्चितता वहन की पूर्ति अधिक होगी क्योंकि उनके त्याग की क्षतिपूर्ति हो जायेगी। रेखाचित्र से स्पष्ट है, यदि लाभ दर OP से अधिक हो जाय तो ऐसे लोग भी साहसी के रूप में सामने आ सकते हैं जो पहले कम लाभदर पर जोखिम को वहन करने के लिए तैयार नहीं थे। इस प्रकार यह स्पष्ट हुआ कि अनिश्चितता ही पूर्ति रेखा सामान्य पूर्ति रेखा की ही तरह ऊपर दाहिनी ओर उठती हुई होगी जो यह प्रदर्शित करेगी कि जैसे-जैसे लाभ की दर बढ़ती जायेगी साहसी की पूर्ति बढ़ती जायेगी।
- लाभ की संस्थिति दर का निर्धारण वहाँ होगा जहाँ नीचे गिरती हुयी माँग रेखा ऊपर से उठती हुयी पूर्तिरेखा के बराबर हो जाय जैसा रेखाचित्र में प्रदर्शित है। नीचे गिरती हुयी माँग-रेखा (DD) ऊपर उठती हुयी पूर्ति रेखा (SS) को E बिन्दु पर काटती है। लाभ की दर OP निर्धारित होगी।



# लाभ का समाजवादी सिद्धान्त

- कार्ल मार्क्स ने इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। पूँजीवादी व्यवस्था में उत्पादन का पारिश्रमिक श्रम को प्राप्त नहीं होगा। बल्कि वह जितना भाग उत्पादित करता है, उससे कम भाग उसे प्राप्त होता पाता है। इस व्यवस्था में पूँजीपति, श्रम का शोषण करता है और श्रम एक अधिक्य मूल्य का निर्माण करता है, जिसे पूँजीपति हड़प कर जाता है। मार्क्स यह मानते थे कि लाभ एक प्रकार की कानूनी डकैती है जो पूँजीवादी व्यवस्था में श्रम के शोषण के फलस्वरूप पूँजीपति को प्राप्त होती है। श्रम-शक्ति की यह विशेषता है कि यह अपने मूल्य से अधिक मूल्य का सृजन करती है। श्रम-शक्ति का निर्धारण श्रम की पुनरूत्थान लागत पर निर्भर करता है अर्थात् उन वस्तुओं व सेवाओं के मूल्य पर जो श्रमिक को न्यूनतम निर्वाह - स्तर पर बनाये रखने के लिए आवश्यक है। मार्क्स के अनुसार लाभ श्रम-शक्ति के शोषण के कारण उत्पन्न होता है।
- **आलोचनायें:-** इस सिद्धान्त के विरुद्ध विद्वानों की तीखी प्रतिक्रियाएँ हुई हैं। उनमें से कुछ प्रमुख निम्नवत् है -
- यह सिद्धान्त रिकार्डों के मूल्य सिद्धान्त पर आधारित है जिसके अनुसार श्रम ही मूल्य निर्धारित करता है। यह बात गलत है क्योंकि उत्पादन के अन्य साधन भी उत्पादन में योगदान देते हैं और वे भी समान रूप से महत्वपूर्ण हैं।
- लाभ जोखिम अनिश्चितता के कारण उत्पन्न होते हैं न कि श्रम के शोषण के कारण।
- समाजवादी व्यवस्था में भी लाभ का औचित्य है नहीं होने से अर्थव्यवस्था में उथल-पुथल हो सकती है। क्योंकि यदि सरकारी उद्यम हानि ही देते रहें तो अर्थव्यवस्था की क्या स्थिति होगी हम इसकी कल्पना कर सकते हैं।
- लाभ को कानूनी डाका कहना उद्यमी की पृष्ठभूमि को समाप्त करना है।